ईडर अभियान और अहमदनगर का युद्ध (1520 ई.)

महाराणा सांगा का भयंकर पलटवार एवं ऐतिहासिक विश्लेषण

प्रकाशन तिथि: 24 अगस्त 2026

लेखक/संकलनकर्ता: गोविंद मालवीय (REAL HI STORY)

दस्तावेज़ पहचानकर्ता: `IA-HIST-2026-GM-0824`

प्राथमिक साक्ष्य ग्रंथ: *मीरात-ए-सिकंदरी, तारीख-ए-फ़रिश्ता, नैणसी री ख्यात, वीर विनोद*

1520 ईस्वी में मेवाड़ के महाराणा संग्राम सिंह (राणा सांगा) और गुजरात के सुल्तान मुज़फ़्फ़र शाह द्वितीय के मध्य राजपूताने तथा गुजरात सल्तनत के सीमावर्ती क्षेत्र में एक ऐतिहासिक सैन्य अभियान घटित हुआ। इस युद्ध का मुख्य कारण ईडर रियासत का उत्तराधिकार विवाद और गुजरात सल्तनत के गवर्नर निज़ाम-उल-मुल्क (उपाधि: मुबारिज़-उल-मुल्क) द्वारा किया गया अपमानजनक व्यवहार था। महाराणा सांगा ने 40,000 घुड़सवारों के विशाल गठबंधन का नेतृत्व करते हुए ईडर पर अपने दामाद रायमल को पुनः स्थापित किया, अहमदनगर (वर्तमान हिम्मतनगर) के किले को ध्वस्त किया और सुल्तान की सेना को पराजित किया। यह दस्तावेज़ इस घटनाक्रम के प्राथमिक फारसी और राजस्थानी ऐतिहासिक साक्ष्यों को प्रामाणिक रूप से प्रस्तुत करता है।

1. ईडर रियासत का रणनीतिक महत्व एवं उत्तराधिकार का संकट

अरावली पर्वतमाला के दक्षिणी अंचल में स्थित ईडर रियासत मेवाड़ और गुजरात सल्तनत के बीच एक अत्यंत महत्वपूर्ण बफर स्टेट (Buffer State) थी। व्यापारिक और सामरिक मार्गों पर नियंत्रण के कारण दोनों शक्तियों के लिए ईडर पर प्रभाव बनाए रखना आवश्यक था।

उत्तराधिकार का घटनाक्रम:

1. **राव भाण का काल:** ईडर के राठौड़ राजा राव भाण के दो पुत्र थे—सूरजमल और भीम।
2. **तख्तापलट:** सूरजमल की अकाल मृत्यु के उपरांत उनके पुत्र **रायमल** वैधानिक उत्तराधिकारी बने। किंतु रायमल के अल्पवयस्क होने का लाभ उठाकर उनके चाचा भीम ने सिंहासन पर अधिकार कर लिया।

3. **मेवाड़ से वैवाहिक संबंध:** रायमल ने चित्तौड़गढ़ जाकर महाराणा सांगा की शरण ली। महाराणा सांगा ने अपनी पुत्री का विवाह रायमल से कर उन्हें सैन्य संरक्षण प्रदान किया।
4. **गुजरात सल्तनत का हस्तक्षेप:** भीम की मृत्यु के पश्चात उनके पुत्र **भारमल** को गुजरात के सुल्तान मुज़फ़्फ़र शाह द्वितीय का समर्थन प्राप्त हुआ और वह ईडर का शासक बन बैठा।

1517 ईस्वी में महाराणा सांगा ने सैन्य चढ़ाई कर भारमल को निष्कासित कर दिया और रायमल को ईडर का शासक नियुक्त किया।

2. अपमानजनक उकसावा: कुत्ते से जुड़ा प्रसंग एवं फारसी साक्ष्य

सुल्तान मुज़फ़्फ़र शाह द्वितीय ने ईडर पर पुनः नियंत्रण पाने हेतु अपने सेनापति निज़ाम-उल-मुल्क को '**मुबारिज़-उल-मुल्क**' की उपाधि देकर ईडर का गवर्नर बनाकर भेजा।

प्रामाणिक साक्ष्य (*मीरात-ए-सिकंदरी*):

गुजरात सल्तनत के समकालीन इतिहास ग्रंथ *मीरात-ए-सिकंदरी* के अनुसार, मुबारिज़-उल-मुल्क के दरबार में एक चारण ने महाराणा सांगा की वीरता की प्रशंसा की। इससे क्रुद्ध होकर मुबारिज़-उल-मुल्क ने ईडर किले के मुख्य द्वार पर एक कुत्ता बांध दिया और उसका नाम '**सांगा**' रखा।

मुबारिज़-उल-मुल्क ने सार्वजनिक रूप से ताना मारा:

"यदि सांगा में पुरुषों जैसा साहस है, तो वह ईडर आकर अपने नाम के इस कुत्ते को छुड़ाकर दिखाए।"

3. सैन्य लामबंदी एवं अहमदनगर का युद्ध

चित्तौड़गढ़ में समाचार मिलते ही महाराणा सांगा ने विशाल सेना के साथ गुजरात की ओर प्रस्थान किया।

गठबंधन सेना की संरचना:

- **मेवाड़ की मुख्य सेना:** महाराणा सांगा के नेतृत्व में 40,000 घुड़सवार।
- **सिरोही की सेना:** सांगा के भांजे राव अखेराज प्रथम देवड़ा (लखेता अखेराज)।
- **वागड़ की सेना:** डूंगरपुर के रावल उदयसिंह।

- **मेड़ता की सेना:** राव वीरमदेव।

अहमदनगर की घेराबंदी एवं पतन:

1. **मुबारिज़ का पलायन:** सांगा की सेना के आगमन की सूचना पाकर मुबारिज़-उल-मुल्क ईडर छोड़कर **अहमदनगर (वर्तमान हिम्मतनगर, गुजरात)** के मजबूत किले में जा छिपा।
2. **किले के द्वार का टूटना:** राजपूत सेना ने भारी युद्ध-हाथियों तथा संयुक्त प्रहार से अहमदनगर किले के द्वारों को तोड़ दिया।
3. **सल्तनत सेना का पराभव:** किले के भीतर हुए भीषण युद्ध में मुबारिज़ के प्रमुख अधिकारी (जैसे असद-उल-मुल्क) मारे गए। मुबारिज़ स्वयं गंभीर रूप से घायल होकर अहमदाबाद भाग खड़ा हुआ। सांगा ने अहमदनगर को ध्वस्त कर शाही खजाना जब्त किया और रायमल को ईडर पर पुनः स्थापित किया।

4. ऐतिहासिक तथ्य जाँच (Fact-Check)

विषय	प्रचलित लोक-कथा / दावा	प्राथमिक ऐतिहासिक साक्ष्य (*मीरात-ए-सिकंदरी* आदि)
प्रति-अपमान (कुत्ता बांधना)	सांगा ने भी अहमदनगर में मुबारिज़ के नाम का कुत्ता बांधा।	**अकादमिक रूप से अप्रमाणित:** सांगा का प्रतिशोध विशुद्ध सैन्य विजय और किले के विध्वंस के रूप में हुआ था।

© 24th Aug. 2026, Govind Malviya (REAL HI STORY).

The Idar Campaign and the Battle of Ahmednagar (1520 AD)

Maharana Sanga's Fierce Retaliation and Historical Analysis

In 1520 AD, a major military conflict took place between Maharana Sangram Singh (Rana Sanga) of Mewar and Sultan Muzaffar Shah II of the Gujarat Sultanate along the border region of Rajputana and Gujarat. The primary triggers of the war were a succession dispute in the state of Idar and an explicit provocation staged by the Sultanate's governor, Nizam-ul-Mulk (titled Mubariz-ul-Mulk). Leading a confederated force of 40,000 cavalry, Maharana Sanga reinstated his son-in-law Raimal on the throne of Idar, breached and destroyed the garrison at Ahmednagar (present-day Himmatnagar), and decisively defeated the Sultanate's forces. This document

preserves the academic narrative based on primary Persian chronicles and contemporary Rajput traditions.

1. Strategic Geopolitics of Idar and the Succession Crisis

Situated in the southern foothills of the Aravalli range, the principality of Idar functioned as a crucial buffer state between Mewar and the Gujarat Sultanate. Control over Idar allowed strategic dominance over major military and trade routes connecting northern India with the western sea coast.

Chronology of the Succession Dispute:

1. **Rule of Rao Bhan:** The Rathore ruler of Idar had two sons—Surajmal (elder) and Bhim (younger).
2. **Usurpation:** Following Surajmal's early death, his minor son **Raimal** was the legitimate heir. Taking advantage of Raimal's youth, his uncle Bhim usurped the throne.
3. **Alliance with Mewar:** Raimal fled to Chittorgarh seeking shelter under Maharana Sanga. Sanga formed a marital alliance by marrying his daughter to Raimal, extending military backing to his cause.
4. **Sultanate Interference:** After Bhim's death, his son **Bharmal** assumed power under the direct patronage of Sultan Muzaffar Shah II of Gujarat.

In 1517 AD, Maharana Sanga launched a campaign against Idar, deposed Bharmal, and crowned Raimal as the rightful ruler.

2. The Provocation: Persian Documentation of the Insult

In response to Bharmal's eviction, Sultan Muzaffar Shah II dispatched his general Nizam-ul-Mulk, bestowing upon him the title **Mubariz-ul-Mulk**, to re-establish Sultanate authority in Idar.

Primary Evidence (*Mirat-i-Sikandari*):

According to the contemporary Persian text *Mirat-i-Sikandari*, a court bard praised Maharana Sanga's valor in Mubariz-ul-Mulk's presence. Enraged, Mubariz chained a stray dog to the main gate of Idar Fort and named it **'Sanga'**.

Mubariz-ul-Mulk publicly issued a direct challenge:

"If Sanga possesses true manly courage, let him march to Idar and free the dog named after him."

3. Military Mobilization and the Siege of Ahmednagar

Upon receiving news of the insult at Chittorgarh, Maharana Sanga launched an immediate, large-scale expedition into Gujarat.

Structure of the Coalition Army:

- **Mewar Core Force:** 40,000 elite cavalry led directly by Maharana Sanga.
- **Sirohi Contingent:** Led by Sanga's nephew, Rao Akheraj I Devda (Lakheta Akheraj).
- **Vagad Contingent:** Led by Rawal Uday Singh of Dungarpur.
- **Merta Contingent:** Led by Rao Viramdev.

Siege and Fall of Ahmednagar:

1. **Flight of Mubariz:** Learning of Sanga's rapid march, Mubariz-ul-Mulk abandoned Idar without offering battle and retreated to the fortified town of **Ahmednagar (present-day Himmatnagar, Gujarat)**.
2. **Breaching the Fortress:** The Rajput forces encircled Ahmednagar Fort and breached its heavy outer gates using war elephants and battering rams.
3. **Annihilation of Garrison:** Close-quarters combat inside the fort resulted in the death of key Sultanate commanders (including Asad-ul-Mulk). Mubariz-ul-Mulk was severely wounded and escaped under darkness toward Ahmedabad. Sanga dismantled the fortress, seized the imperial treasury, and firmly secured Raimal on the throne of Idar.

4. Historical Fact-Check & Comparative Analysis

Historical Parameter	**Popular Folklore / Claim**	**Primary Historical Documentation (Mirat-i-Sikandari, etc.)**
Counter-Insult	Sanga also tied a dog named Mubariz at Ahmednagar.	**Unsubstantiated:** Sanga’s response was purely military, culminating in the siege and destruction of the fortress.

© 24th Aug. 2026, Govind Malviya (REAL HI STORY).